**ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग**
**डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय**
**पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८१२५**

**बुलेटिन संख्या-४**
**दिनांक-मंगलवार,१४ जनवरी,२०२०**

## विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः १६.० एवं ७.४ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ९४ प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में ७६ प्रतिशत, हवा की औसत गति ५.४ कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण ०.६ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन १.० घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में १२.८ एवं दोपहर में १८.२ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा। रात्री एवं सुबह में कुहासा देखा गया।

## मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

## (१५-१६ जनवरी,२०२०)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी १५-१६ जनवरी,२०२० तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-

- पश्चिमी विक्षोभ के प्रभाव से उत्तर बिहार के जिलों में अगले १६-१७ जनवरी में बदलीनुमा मौसम तथा कहीं-कहीं हल्की वर्षा या बूंदा-बूंदी की संभावना है। इसकी अधिक संभावना उत्तर-पश्चिम बिहार के जिलों जैसे पश्चिम तथा पूर्वी चम्पारण, सीतामढ़ी, सारण एवं गोपालगंज में है।
- पूर्वानुमान की अवधि में अधिकतम तापमान १४ से १६ डिग्री सेल्सियस एवं न्यूनतम तापमान ६ से ८ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है। फिलहाल अगले ३-४ दिन ठंढ़ का प्रकोप बरकरार रहने का अनुमान है। उत्तर बिहार में १५-१६ जनवरी को कोल्ड-डे की स्थिति बने रहने की संभावना है।
- १७-१८ जनवरी में पूरवा हवा तथा शेष अवधि में पछिया हवा चल सकती है। इस दौरान हवा की रफ्तार औसतन ५ से १० कि०मी० प्रति घंटा रह सकती है। रात्री एवं सुबह में मध्यम से घना कुहासे छा सकते हैं।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ९० से ९५ प्रतिशत तथा दोपहर में ७० से ८० प्रतिशत रहने की संभावना है।

## • समसामयिक सुझाव

- १६-१७ जनवरी मे हल्की वर्षा की संभावना को देखते हुए कृषि कार्य जैसे कीटनाशक दवाओं के छिड़काव आदि में सर्तकता बरतने की आवश्यकता है। हल्दी की तैयार फसलों की खुदाई नहीं करें।
- पिछात बोयी गई गेहूँ की फसल में खर-पतवार नियंत्रण के कार्य को प्राथमिकता दें। फसल में जिंक की कमी के लक्षण (गेहूँ के पौधों का रंग हल्का पीला हो जाना) दिखाई दें रहें हो तो २.५ किलोग्राम जिंक सल्फेट, १.२५ किलोग्राम बुझा हुआ चुना एवं १२.५ किलोग्राम युरिया को ५०० लिटर पानी में घोलकर प्रति हेक्टेयर की दर से १५ दिन के अन्तराल पर दो बार छिड़काव मौसम साफ रहने पर करें।
- वर्त्तमान मौसम आलु की फसल में पिछेती झुलसा रोग के फैलाव के लिए अनुकूल है। कृषक भाई फसल की नियमित रुप से निगरानी करें। इस रोग में फसलों की पत्तियों के किनारे व शिरे से झुलसना प्रारंभ होती है जिसके कारण पुरा पौधा झुलस जाता है। इसके बचाव हेतु २.० से २.५ ग्राम इण्डोफिल एम० ४५ फफूँदी नाशक दवा का प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें। इस छिड़काव के ८-१० दिनों बाद पुनः रीडोमिल दवा का १.५ से २.० ग्रम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बना कर छिड़काव करें। कटवर्म या कजरा पिल्लू कीट का प्रकोप फसल में दिखनें पर बचाव के लिए क्लोरपायरीफॉस २० ई०सी० दवा का २.५ से ३ मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- मटर की फसल में चूर्णिल फफूँदी (पाउडरी मिल्डयु) रोग की निगरानी करें। इस रोग में पत्तीयों, फलों एवं तनों पर सफेद चूर्ण दिखाई पड़ती है। इस रोग से वचाव के लिए फसल में कैराथेन दवा का १.० मिलीलीटर प्रति लीटर पानी अथवा सल्फेक्स दवा का ३ ग्रम प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें। मटर में नियमित रुप से फली छेदक कीट की निगराणी करें।
- विलम्ब से बोई गयी दलहनी फसल में २ प्रतिशत यूरिया के घोल का छिड़काव एक सप्ताह के अन्तराल पर दो बार करें। अरहर में फली छेदक कीट की नियमित रुप से निगरानी करते रहें।
- सरसों की फसल में लाही कीट की नियमित रुप से निगरानी करे। यह सुक्ष्म आकार का कीट पौधो के सभी मुलायम भागो-तने व फलीयों का रस चुसते है। ये कीट मधु-स्त्राव निकालते है, जिससे पौधे पर फंगस का आक्रमण हो जाता है तथा जगह-जगह काले धब्बे दिखाई देते हैं। ग्रसित पौधों में शाखाएँ कम लगती हैं। पौधे की बढ़वार रुक जाती है। पौधे पीले पड़कर सुखने लगते है। फलीयॉ कम लगती है तथा तेल की मात्रा में भी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए डाईमेथोएट ३० ई०सी० दवा का १.० मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर छिड़काव करें।
- मिर्च की फसल में थ्रिप्स कीट की निगरानी करे। इसके शिशु/वयस्क कीट सैकड़ो की संख्या में पौधो की पत्तियो की निचली सतह पर छिपे रहते हैं और कभी-कभी उपरी सतह पर भी देखे जा सकते हैं। ये पत्तियो, कलियो व फूलो का रस चुसते है। यह कीट मिर्च में बांझी/विषाणु रोग फैलाता है। इससे बचाव हेतु इमिडक्लोप्रीड १७.८ ई०सी० का १ मी०ली० या डायमेथोएट ३० ई०सी० का २ मि०ली० प्रति ३ लीटर पानी की दर से घोल बनाकर फसल पर छिड़काव करे।
- चने एवं टमाटर की फसल में फलीछेदक कीट के नियंत्रण हेतु फिरोमोन प्रपंश @ ३-४ प्रपंस प्रति एकर की दर से उन खेतों में लगायें।
- तापमान में आई लगातार गिरावट को देखते हुए पशुपालक भाई दूधारु पशुओं के रख-रखाव एवं खान-पान पर विशेष ध्यान दें। हरे एवं शुष्क चारे के मिश्रण के साथ नियमित रुप से ५० ग्राम नमक, ५० से १०० ग्राम खनिज मिश्रण प्रति पशु एवं दाना खिलावें। दुधारु पशुओं के दूध उत्पादन में आयी कमी को दूर करने के लिए नियमित रुप से कैल्सियम की सूई दिलायें अथवा तरल कैल्सियम खिलायें।

| | |
|---|---|
| आज का अधिकतम तापमानः १२.५ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ६.६ डिग्री कम | आज का न्यूनतम तापमानः ६.० डिग्री सेल्सियस, सामान्य से १.५ डिग्री कम |

**(डॉ० ए. सत्तार)**
**नोडल पदाधिकार**